।उँ नमो भगवते गोपीनाथाय

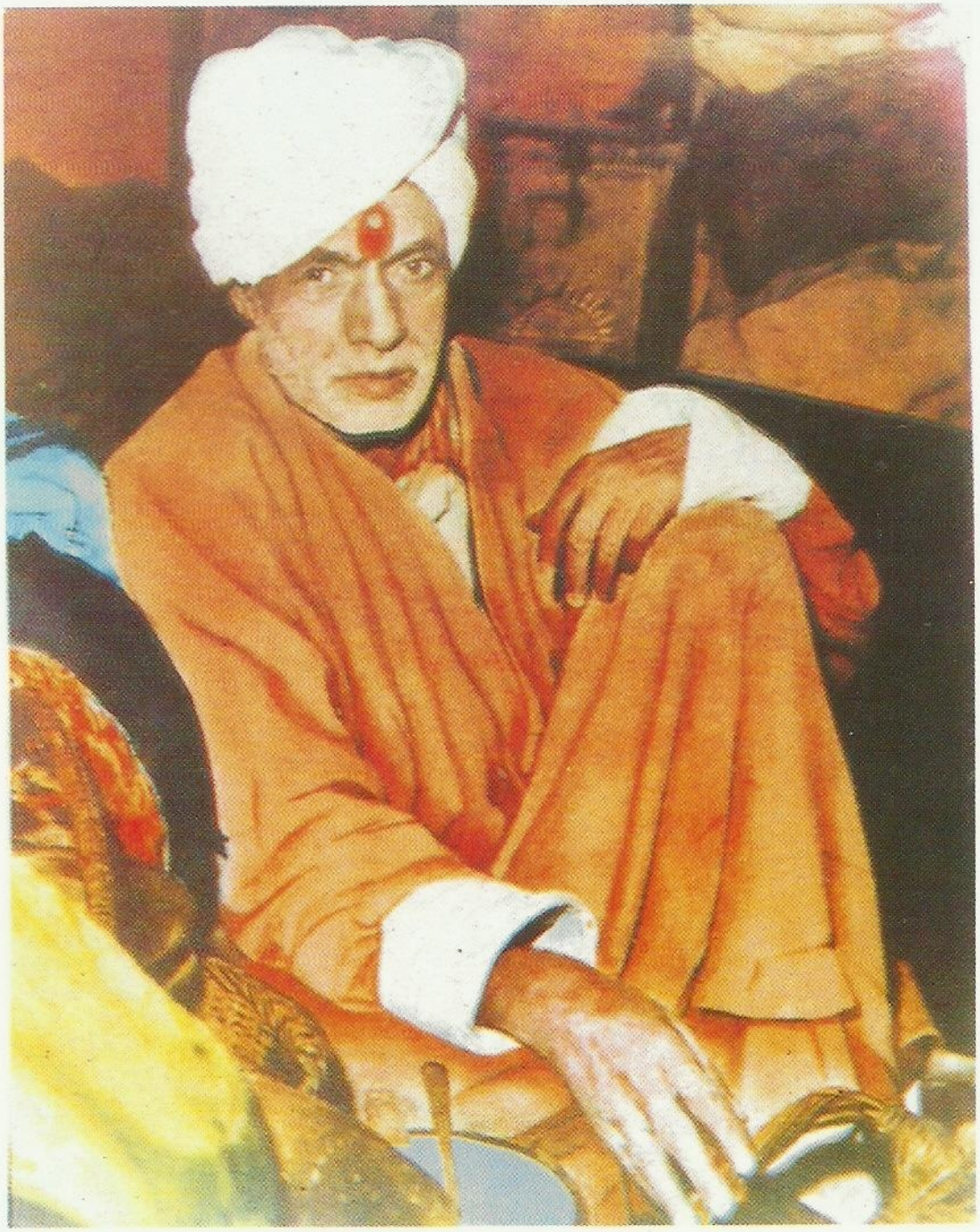

ध्यान मूलं गुरोर्मूर्तिः पूजा मुलं गुरोः पदम्

शास्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा। श्री गुरु महान हैं श्री गुरु वाणी और मन से परे हैं। शिव स्वरूप होने के कारण श्री गुरु को सांसारिक जीव जान नहीं पाते। अतः वाणी द्वारा उनका वर्णन संभव नहीं। हमारा मन भी उनको समझ नहीं पाता।

चूंकि श्री गुरु ही सब कुछ हैं, ध्यान, शास्त्र तथा मोक्ष उनकी कृपा से ही संभव हैं चूंकि साधना में हमारा प्रारम्भ पूजा से होता है जिसके लिए श्री गुरु के चरण कमलों की पूजा होनी है। जो चरण कमल सफेद और लाल रंग के मिश्रण से बने चमकीले रंग से शोभायमान हैं (जिनका स्पर्ष सेवक को प्राप्त हुआ है)।

चरण कमलों में भी जब हम उनके नाखुन पर नतमस्तक होंगे तो लक्ष्मी का वर्दान पाते हैं। हमें ऐसा चित्र प्राप्त है जिसमे उनके दाई चरण कमल का नाखुन स्पष्ट है जो उनके कृपा की ही देन है क्योंकि जैसे मुझे ज्ञात है कि उनका चित्र उतारना कोई सामान्य बात नहीं थी जबकि कई लोगों को घंटों तक परिश्रम करना पड़ा रहा फिर ही फोटो उतरती जो हमें अब लाभदायक बन रहे है। हम श्री गुरुदेव के चरण कमलों को मन, बुद्धि, प्राण तथा वचन से प्रणाम करते है।

श्री गुरु महोत्सव – तीन जुलाई

भगवान गोपीनाथ जी शाम्भव योगी थे अर्थात वह कर्म–बन्धन से मुक्त थे, वह चारों दिशाओं में परमात्मा को देख पाते थे और उनसे सामान्य वार्तालाप करते थे, प्रायः समाधि में ही लीन रहते थे। उन्होंने अनुपाय अवस्था भी प्राप्त की थी जिस से अपने ही आनन्द में लीन रहते थे।

शैवयोगी होने के कारण वह इहलोक में भी सब कुछ निहारते रहते हैं और तीनों लोकों का निरीक्षण कर सकते हैं। वह हजारों वर्षों तक पथ प्रदर्शक कर सकते हैं। भगवान जी अपनी शक्ति के संवेगों से दूर बैठे भक्तों को आकर्षित करते हैं जिससे उन्हें आत्म साक्षात्कार में सहायता मिलती है।

श्री भगवान जी.ने, 3 जुलाई 1999 को कार्गिल युद्ध क्षेत्र में प्रकट होकर भारत के वीर सेनानियों का मार्ग दर्शन किया जो देश के लिए गौरव बना। अतः हम सब का कर्तव्य है कि हम उनकी महान एवं ज्वलन्त शक्ति को पूजते रहे। उन्हें आवाहन करते रहे कि हम किसी बड़ी त्रासदी में न फंस जाएँ। 'ओं नमों भगवते गोपीनाथाय" महामंत्र का सामूहिक जाप करते रहे। हमें आपस में उनकी भक्ति की चर्चा करते हुए तथा उनके प्रभाव को जानते हुए निरन्तर उनका स्मरण करते रहना हैं जिससे संतोष प्राप्त होगा।

श्री गुरु गीता में देवादिदेव महादेव ने कहा है कि ब्रह्म और श्री गुरु देव अभिन्न हैं। अतः शान्ति तथा ज्ञान प्राप्ति के लिए हमें गुरु आश्रम में निरन्तर सेवा करनी होती है।

श्री गुरु महाराज का प्रचार जनहित के लिये आवश्यक है, ब्रह्म के शक्ति – भंडार पर श्री गुरु का पूरा अधिकार हैं तथा यह शान्ति प्राप्त करने के लिए हमें निरन्तर श्री गुरु सत्संग में बैठना होगा। श्री गुरु महाराज अत्यन्त दयालु हैं और वे ही

हमारी खाली झोली को भरने में समर्थ हैं। श्री गुरु देव न जाने मौज में आकर क्या क्या प्रदान करेंगे।

3 जुलाई 1898 को भगवान जी के जन्म लेने पर स्वामी विवेकानंद जी इनके मकान स्थित बानमहला, श्रीनगर पर किसी अप्रत्यक्ष दिव्य कारणवश पधारे, प्रत्यक्ष से वह उस दर्ज़ी के पास से एक अमेरिका की झंडी बनाने आये जो उनके मकान के नीचे वाली दुकान में काम करता था, स्वामी जी वितसता से एक हावसबोट में बैठ कर यहां तक पहुंचे और यह झंड़ी कल अर्थात 4 जुलाई के समारोह में उन्हें प्रयोग में लानी थी।।

परम्ब्रह्म मनुष्य को नर्क के आग से बचाने के लिए अपने ही अंश को श्री गुरु के रूप में भेजते हैं श्री गुरु गीता में भगवान शिव पार्वती जी से कहते हैं कि ब्रह्म ज्ञान वाले गुरु संसार सागर से पार करा सकते हैं। अतः भगवान गोपीनाथ जी की छत्र छाया पाकर हम अहोभाग्य समझते हैं, 3 जुलाई की महानता श्री गुरु परिवार के लिए स्मरणीय है। भारत सरकार ने भी इस तिथि को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए 3 जुलाई 1998 को 3 रु0 की डाक टिकट भगवान जी के चित्र के साथ निकाली जो भगवान गोपीनाथ जी जन्म शताब्दी की भेंट रही।

यह टिकट तत्कालीन सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने जारी किया, उन्होंने इस अवसर पर कहा कि कश्मीर में आतंकवाद के चलते यह समारोह भगवान गोपीनाथ जी के जन्म स्थान के बाहर करना पड़ा, उन्होंने कश्मीरी पंडित समुदाय को बधाई दी कि तमाम तकलीफों के बावजूद उन्होंने पूरी श्रद्धा और निष्ठा के साथ एक वर्ष तक भगवान जी के जन्मशती समारोहों का आयोजन किया और सार्वभोमिक आध्यात्मिक मुल्यों और भारतीयता के प्रति कश्मीरियों की योगदान की भी सराहना की।

भगवान गोपीनाथ जी के जन्मशती स्मारक के तौर पर जगतगुरु भगवान गोपीनाथ जी फाउंडेशन की स्थापना की घोषणा की गई।

जिसका विधिवत श्री गणेश 1999 ई0 में दिल्ली के उत्तम नगर इलाके में हुआ। यहां 1/बी, दयालसर रोड़ इसके कार्यालय में भगवान जी की संगमरमर की मूर्ति भी स्थापित की गई।

3 जुलाई 2000 को "प्रकाश भगवान गोपीनाथ जी" पत्रिका का पहला अंक फाउंडेशन की तरफ से प्रकाशित हुआ, जो "3 जुलाई" के सम्मान को और भी चार चांद लगा रहा है।

अतः इस तिथि को प्रेम से "श्री गुरु महोत्सव" के तोर पर हर स्थान पर मनाना चाहिए। ताकि हम सभी श्री गुरु कृपा से मालामाल हो। तथा दिव्य ज्योति से लाभांवित हो। श्री गुरु महोत्सव साधक के लिए विशेष अवसर होता है जब श्री

गुरु कृपा काफी मात्रा में उपलब्ध होती है। हे भगवान गोपीनाथ जी! आप भक्तों के मन रूपी मानसरोवर के राजहंस हो, प्रकट रूप से सबों के देखने वाले हो और अप्रकट रूप से भी सबों को देखने वाले हो। सद्गुरु के रूप में आप भगवान शंकर के ही रूप को धारण करने वाले हो, ऐसे आप को हमारा नमस्कार हो। हे सद्गुरु महाराज! आप अनुन्तर हैं आप की तुलना में कोई दूसरा नहीं है। आप कल्याण स्वरूप हैं, आप प्रत्येक प्रकार की वृद्धि अर्थात् आत्मिक, भौतिक और दैहिक उन्नति को प्रदान करने वाले हैं।

प्रज्ञान को देने वाले श्री गुरुमहाराज के चरण कमलों को मैं कोटिशः प्रणाम करता हूं। वे सदा मेरे मन में वास करे यही मेरी कामना है, हे स्वामी, हे गुरुमहाराज, हे नाथ, हम आप के चरण कमलों को मन, बुद्धि, प्राण तथा वचन से प्रणाम करते हैं।

अंग संस्पर्शजैः पुण्यै पावनीकृत भूतल।

हे गोपीनाथ! नमस्तुभ्यं में प्रसीद दयां कुरु।।

हे गुरु महाराज, आप के हाथ पैर आदि शरीर के अंगों के छूने से हर वस्तु में पुण्य राशि का प्रादुर्भाव होता हैं तथा सारी धरती पवित्र हुई हैं। आप के पवित्र चिन्ह हर पूजा स्थल तथा आपके मन्दिरों को पवित्रता प्रदान करते हैं।

आपकी "चिल्म" जिस को कि हम विशेष बांसरी का स्वरूप मानते हैं, इसके दर्शन से कल्याण होता है।

यह विशेष बांसुरी भगवान जी के कर कमलों में घंटों तक रहती थी और उसे अपने होठों पर रख कर आनन्दित होते थे। अब भक्तों के सौभाग्य तथा भगवान गोपीनाथ जी की अथाह कृपा से उत्तम नगर नई दिल्ली के 1/बी, दयालसर रोड़ स्थित "सिद्धपीठ" के आसन पर दर्शन के लिए विराजमान हैं।

यहां हम साधकों तथा भक्तों को श्री गुरु महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए बार–बार आवाहन करते हैं ताकि सब का सपरिवार कल्याण हो।

भगवान चेतना अर्थात समदृष्टि तथा सेवा के गुण अपना कर हम स्वयं अपने भाग्य के निर्माता हो सकते हैं तथा भगवान चेतना के आंदोलन के भागीदार भी होंगे, जिससे हमारा कल्याण होगा।

तथास्तु!

विनीत : प्राण नाथ कौल

स्थान : 1/बी, दयालसर रोड़,
बैंक ऑफ बरोड़ा वाली गली,
ऐनकवाली दुकान के पास,
उत्तम नगर, नई दिल्ली–110059